भारत में कृषि शिक्षा: बदलाव का समय

सुरेश के. सिन्हा

कृषि क्षेत्र खाद्य सुरक्षा, रोज़गार के अवसर पैदा करने और आर्थिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इन दिनों कृषि के विकास में आ रही गिरावट पर चिन्ता व्यक्त की जा रही है। आधुनिक कृषि ज्ञान-आधारित है। अतः इसमें सभी स्तरों की शिक्षा का, विशेषतः उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। इस लेख में कृषि विज्ञान के क्षेत्र में उच्च शिक्षा के विकास का इतिहास और विभिन्न पड़ावों की व्याख्या की गई है जिसके चलते आगे चलकर भारत में अमरीका की लैन्डग्रान्ट व्यवस्था पर आधारित कृषि विश्वविद्यालय बने। गौरतलब है कि अमरीका में इस प्रकार के शुद्ध कृषि विश्वविद्यालय नहीं हैं। इसी का परिणाम है कि कृषि विश्वविद्यालय सामान्य विश्वविद्यालयों जैसे विज्ञान, कला, वाणिज्य एवं मानवशास्त्र आदि से अलग-थलग हो गए। आज के कृषि महाविद्यालयों का ढांचा, कामकाज और उद्देश्य किसी भी प्रकार से राधाकृष्ण विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के ग्रामीण विश्वविद्यालयों के सिद्धांतों से मेल नहीं खाता है। परिणामस्वरूप इन कृषि महाविद्यालयों का ग्रामीण विकास में कोई विशेष योगदान नहीं है। हरित क्रान्ति के आरम्भ में बीजों की किस्मों में विविधता पर बहुत ध्यान दिया गया, जिससे अनाज के उत्पादन में वृद्धि तो हुई, किन्तु उपयुक्त ज्ञान के अभाव में यह कृषि के स्थायित्व व सजीवता घटाने का कारण भी बनी। चूंकि कृषि क्षेत्र भारत का एक अहम क्षेत्र है अतः कृषि महाविद्यालयों की कृषि से दूरी को खत्म करने और विविध विषयों वाले विश्वविद्यालयों से आपसी तालमेल बढ़ाने का समय आ गया है। इस परिवर्तन की प्रक्रिया के विषय में इस लेख में चर्चा की गई है।

खेती का इतिहास मानव के विकास का इतिहास है। मानव ने उन पौधों और जानवरों को चुना जिनसे उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति होती थी। यह किसी सोच या अनुभव से प्रेरित था या फिर इन दोनों का मिलाजुला स्वरूप था, पता नहीं। आज की मुख्य फसलों व जानवरों का इतिहास सदियों पूर्व की शिल्पकला, मूर्तिकला, चित्रकारी एवं स्मारकों में दिखाई पड़ता है। इंसान ने पिछली कई सदियों से कोई नई फसल अथवा जानवर नहीं जोड़े हैं।

आज की तरह पहले कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। फिर भी पीढ़ियों से लोग पौधे लगाने, उनकी रक्षा करने और जानवरों व मवेशियों की नई-नई किस्में विकसित करने का काम करते आए हैं। हम जानते हैं कि अधिकांश प्राचीन सभ्यताएं नदी किनारे विकसित हुईं, दरअसल इसका कारण हमारे पूर्वजों का पानी के महत्व को पहचानना था। उस वक्त लोग अपने आसपास के परिसर को भलीभांति समझते थे। कृषि में शिक्षा का हमारे सीखने और क्रियान्वयन में योगदान होना चाहिए। साथ ही हमारी इस सूझबूझ और दूरदर्शिता को वैज्ञानिक आधार देना भी शिक्षा के ज़िम्मे होना चाहिए।

कृषि के औपचारिक पहलु और कृषि शिक्षा

हम इस बात को कई बार दोहरा चुके हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज भी देश की लगभग 70 प्रतिशत आबादी खेती पर आश्रित है। पिछली सदी में देश की आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था कृषि और कृषक के इर्द गिर्द रही। अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कृषकों को संगठित करना आवश्यक था। परन्तु इसमें कृषि कोई गम्भीर सरोकार का विषय न था। अलबत्ता जब सूखे, अतिवृष्टि और बीमारियों से फसलें नष्ट हुईं और अकाल की स्थिति आ गई तो सरकार की आंखें खुलीं। इसलिए अकाल प्रबंधन का काम गृह मंत्रालय के सुपुर्द कर दिया गया।

सन् 1870 तक ब्रिटिश सरकार में कोई कृषि विभाग नहीं था। इसी वर्ष कृषि एवं वाणिज्य विभाग बनाने का प्रस्ताव आया। लेकिन इसकी वजह सूखे